पद १९

(राग: यमन जिल्हा - ताल: दादरा)

दत्त अवधूत गुरु दत्त अवधूत। स्वच्छं दे पालटवी रूप गुणानंत।।धु.।। देवत्रय मायिक दृग्बंधन केलें द्वैत दृश्य रचिलें। नामरूप जाणुनी ब्रह्मचि पूर्ण आलें।।१।। ऐकुनियां प्रजाकाम शुभ विरंची आज्ञा केली ही प्रतिज्ञा। अत्रि म्हणें तया शरण पूर्ण ब्रह्मसंज्ञा।।२।। नरहिर श्रीपाद परमहंस वेषधारी। द्विज संकट वारी। श्रीमाणिकरूपें सकलमता तारी।।३।। स्वात्मसुखा श्रीमनोहररूप प्रगटविलें। दृश्य धन्य केलें। पूर्णकृपें जग हें चिन्मार्तांडचि झालें।।१।।